

## 22. स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत

संकेत बिंदु -

- प्रस्तावना
- स्वच्छता एक आवश्यकता

- अभियान की मुख्य बातें
- उपसंहार

स्वच्छता सिर्फ सौंदर्य या सुरुचि का विषय नहीं, बल्कि हमारे जीवन-मरण से गहराई से जुड़ा गंभीर मुद्दा है। सरकार द्वारा 2 अक्टूबर, 2014 को प्रारंभ किया गया 'स्वच्छ भारत अभियान' वस्तुतः संक्रामक रोगों का नियंत्रण, पेयजल सुरक्षा, शहरी आबादी एवं उद्योगों के कामकाज से उत्पन्न कचरे के निपटान जैसी विकल्पों का सामना करने का आह्वान है।

राष्ट्रीय स्तर पर लागू किए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' को पूरा करने के लिए 5 वर्ष की अवधि (2014-2019 तक) निश्चित की गई तथा इस पर लगभग ₹ 2 लाख करोड़ खर्च होने का अनुमान है। इस अभियान अंतर्गत 4,041 शहरों को शामिल किया जाएगा। इस अभियान की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छता मंत्रालय को ₹ 1 लाख 34 हजार करोड़ और शहरी विकास मंत्रालय को ₹ 62 हजार करोड़ की सहायता प्रदान की जाएगी। इस अभियान की सफलता हेतु जनसामान्य को जागरूक करने के लिए पत्रों के अतिरिक्त सोशल मीडिया का भी उपयोग कर रही है।

'फेसबुक' एवं 'ट्विटर' के माध्यम से लोगों को जोड़ने के अलावा 'क्लीन इंडिया' नामक एक नई वेबसाइट की गई है।

स्वच्छ भारत अभियान में प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए लोगों से अपेक्षा है कि वे किसी भी गंदी जगह को फोटो सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपलोड करें और फिर उस स्थान पर जाकर उसकी वीडियो एवं फोटो भी अपलोड करें।

वास्तव में, स्वच्छता हमारे देश एवं सामान्यजनों के लिए अत्यंत आवश्यक भी है, क्योंकि हमारी आदतें काफी स्वच्छ नहीं हैं। हमारी पहचान स्वच्छ नागरिकों के रूप में नहीं होती है। कुछ समय पूर्व ही इंटरनेशनल काउंसिल ने अपने सर्वेक्षण में कहा था कि औसत भारतीय घर बेहद गंदे एवं अस्वस्थकर होते हैं। विश्व के देशों में भारत को मलेशिया के बाद दूसरा स्थान दिया गया। चरित्र की शुद्धता एवं पवित्रता को अत्यधिक महत्त्व देने वाले भारतीयों को यह भी सोचना चाहिए कि जब तक परिवेश शुद्ध नहीं रहेगा, तब तक विचारों एवं भावनाओं में सुधार नहीं आ सकती। स्वच्छता के अभाव में शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य दोनों दुष्प्रभावित होंगे। एक अस्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ रहने के बावजूद चाहकर भी न तो स्वयं और न ही समाज के विकास में उल्लेखनीय योगदान कर सकता है। इस देशव्यापी अभियान के बहाने से ही हमें अच्छी आदतें अपनाने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि जब तक हमारी आदत का हिस्सा नहीं बन जाती, तब तक गंदगी वापस लौटती रहेगी। स्वच्छता को अपने निजी एवं पेशेवर जीवन का अभिन्न अंग बनाना अनिवार्य है, अन्यथा स्थायी स्वच्छता तथा पूर्णतः स्वस्थ रहने की उम्मीद नहीं की जा सकती।